शिक्षित करो! संगठित करो! संघर्ष करो!

M.A., M.Sc., D.Sc., Ph.D., L.L.D. D.Lit., Barrister-at-Law

बाबा साहब डॉ. भीम राव अम्बेडकर जी का संक्षिप्त परिचय

जन्म	: 14 अप्रैल, 1891
जन्म स्थान	: महू, मध्य प्रदेश
माता	: भीमा बाई
पिता	: सकपाल रामजीराव अम्बेडकर
बौद्ध धम्म दीक्षा	: 14 अक्टूबर, 1956
परिनिर्वाण	: 06 दिसम्बर, 1956

14 अप्रैल 1891 भारत के इतिहास में एक अत्यंत ही महत्वपूर्ण दिन है। इस दिन भारत के प्रांगण में सैकडों वर्षों के अज्ञानता के अंधकार में एक दीप जगमगाया। इस दिन हमारें पथ-प्रदर्शक, हमारें मसीहा भारत रत्न बाबा साहब डॉ. भीम राव अम्बेडकर जी का जन्म हुआ। बचपन से ही बाबा साहब का जीवन संघर्षों से भरा था। उनके जीवन की एक-एक घटना संघर्षों की महागाथा है। बचपन में जब बाबा साहब स्कूल जाते थे, तो उनका बालमन यह नहीं समझ पाता था कि उनको कमरे के बाहर क्यों बैठना पड़ता है? जब बालक भीम का गला प्यास के मारे सूख जाता था तो उनको यह समझ नहीं आता था कि उनको पानी पीने के लिए किसी और का इन्तजार क्यों करना पड़ता है, वह खुद पानी क्यों नहीं पी सकता? ऐसे ही अनेक अनसुलझे सवालों के साथ बाबा साहब बड़े हुए। बाबा साहब ने 1912 में बी.ए. की परीक्षा पास की। इसके बाद बड़ौदा के महाराज सायाजी राव गायकवाड से छात्रवृत्ति प्राप्त करके अमेरिका, इंग्लैंड और जर्मन गए और राजनीति शास्त्र, दर्शन शास्त्र, मानव शास्त्र, अर्थ शास्त्र, समाज विज्ञान और कानून आदि विषयों में M.A., M.Sc., D.Sc., Ph.D., L.L.D. D.Lit., Barrister-at-Law की डिग्रियां ली। छात्रवृत्ति की शर्तों के अनुसार उन्हें बड़ौदा रियासत में रक्षा सचिव की नौकरी करनी पड़ी। इतना ऊंचा पद होने पर भी छुआछूत ने इनका पीछा नहीं छोड़ा। उन्हें किसी ने बड़ौदा शहर में कमरा किराये पर नहीं दिया। किसी तरह पारसी सराय में रहने लगे लेकिन उन्हें जब पता लगा कि डॉ. अम्बेडकर दलित हैं तो उनका सामान सराय से बाहर फेंक दिया। जब वे दफ्तर में प्रवेश करते थे, उनके आगे से कालीन हटा लिया जाता था। चपरासी उन्हें पानी नहीं पिलाता था। फाईल को दूर से ही मेज पर फेंका जाता था। इन सब बातों से बाबा साहब ने सोच विचार किया कि इतना अधिक शिक्षित होने पर भी तथा इतना उच्च अधिकारी होने पर भी उनके साथ यह व्यवहार किया जा रहा है तो मेरे अनपढ़, गरीब, मजबूर समाज का न जाने क्या हाल होगा। तब बाबा साहब ने संकल्प लिया कि, ''मैं अपने समाज के साथ होने वाले भेदभाव व अत्याचार को खत्म करके ही रहूंगा यदि मैं ऐसा कर न सका तो स्वयं को गोली मार कर समाप्त कर लूंगा।''

बाबा साहब ने 'मूकनायक' अखबार शुरू किया जिसके पहले

संस्करण में उन्होंने लिखा कि हिन्दू धर्म विषमताओं का मूल है। हिन्दू धर्म एक मीनार की भांति है और एक जाति एक मंजिल के समान है। एक मंजिल से दूसरी मंजिल पर जाने का कोई रास्ता नहीं है। जो जिस मंजिल पर पैदा होता है उसे उसी मंजिल पर मरना पड़ता है। निचली मंजिल का व्यक्ति चाहे कितना ही लायक क्यों न हो वह ऊपर की मंजिल पर नहीं जा सकता और ऊपर की मंजिल का व्यक्ति चाहे कितना ही मूर्ख क्यों न हो उसे नीचे नहीं धकेला जा सकता। उन्होंने बहिष्कृत हितकारिणी सभा बनाई। उन्होंने कहा ''तुम्हारे दुबले-पतले चेहरे देखकर, करूणा जनक वाणी सुनकर मेरा दिल दुखता है। तुम अनेक युगों से धर्म की गुलामी में सड़ रहे हो फिर भी इनके देवताओं को पूजते हो। जातिवाद देव निर्मित नहीं है, यह मानव निर्मित है। तुम इस देश के वासी हो। हर मानव उन्नति का अधिकारी है। अन्य भारतीयों के समान रोटी, कपड़ा और मकान हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है।'' 20 मार्च 1927 को उन्होंने चवदार तालाब (जो महाड़ में था) से अछूतों द्वारा पानी लेने के लिए आन्दोलन चलाया। उन्होंने कहा था जिस तालाब में जानवर घुस सकते हैं वहां से पानी पी सकते हैं लेकिन अछूतों को उस तालाब से पानी लेने की मनाही क्यों? इसी कड़ी में उन्होंने राम नवमी के दिन नासिक के काला राम मंदिर में प्रवेश के लिए आन्दोलन किया। उन्होंने मनु-स्मृति का दहन किया। क्योंकि यह अछूतों की गुलामी का प्रतीक है। इन आन्दोलनों से बाबा साहब यह साबित करना चाहते थे कि अन्य मनुष्यों की भांति हम भी मानव है। यह एक इंसानियत की लड़ाई थी। इससे अछूतों का स्वाभिमान जागृत हुआ। बाबा साहब ने स्पष्ट जाना कि दलित समाज के पास केवल शिक्षा ही वह साधन है जिसके बल पर यह समाज सर्वांगीण विकास कर सकता है। अतः बाबा साहब ने दलित छात्रों के लिए छात्रवृत्तियां, हॉस्टल, स्कूल, कॉलेज व कई शिक्षण संस्थान स्थापित किए, जैसे- People Education Society, Sidharth College of Arts and Science, Milind College Aurangabad, Sidharth College of Commerce and Economics, Sidharth College of Law.

अंग्रेज सरकार ने भारतीय समस्या का हल करने के लिए इंग्लैंड में वार्ता शुरू की। इस प्रकार 12 नवम्बर 1930 को प्रथम गोलमेज सम्मेलन लन्दन में आयोजित किया गया। उस सम्मेलन में बाबा

साहब ने भारत के दलित समाज का प्रतिनिधित्व करते हुए अंग्रेज सरकार को ललकारा कि जिस समाज में हमें पिछले 2500 वर्षों से इंसानियत से वंचित किया गया, भविष्य में अगर सत्ता इन्हीं सवर्ण हिन्दुओं के पास जाती है तो हमारा भला कैसे हो सकता है? बाबा साहब ने कहा कि दलितों को अपना प्रतिनिधि स्वयं चुनने की व्यवस्था की जाए। इसके बाद 17 अगस्त 1932 को ब्रिटिश सरकार ने दलितों को दोहरे मत तथा अलग मतदान का अधिकार घोषित किया। लेकिन दलितों के इन अधिकारों के खिलाफ गांधी ने पूना की यरवदा जेल में ही आमरण अनशन शुरू कर दिया। परिणामस्वरुप 24 सितम्बर 1932 में बाबा साहब को गांधी के साथ समझौता करने के लिए मजबूर किया गया। इस समझौते को पूना पैक्ट के नाम से जाना जाता है। पूना पैक्ट के माध्यम से ''हमारा प्रतिनिधि हमारे द्वारा चुनने'' का अधिकार गांधी निगल गए। भारत के दलित समाज की बदहाली का जिम्मेदार हिन्दू धर्म को मानते हुए बाबा साहब डॉ अम्बेडकर ने प्रतिज्ञा ली कि '' मै हिन्दू धर्म में पैदा हुआ ये मेरे बस की बात नहीं थी किन्तु मै हिन्दू मरूंगा नहीं। ''

उन्होंने दलितों को समझाया कि तुम ऐसे धर्म में क्यों रहते हो जो तुम्हें नीच ठहराता है। जो तुम्हें शिक्षा की मनाही करता है। जो तुम्हें धन अर्जित नहीं करने देता। जो तुम्हें शस्त्र नहीं रखने देता। जो तुम्हें मंदिर नहीं जाने देता। जो धर्म चीटियों को शक्कर खिलाता है परन्तु अन्य मनुष्यों को छूने से मना करता है। वह धर्म नहीं पाखंड है।

उन्होंने सभी धर्मों का गहन अध्ययन करके निष्कर्ष निकाला कि भारत भूमि पर पैदा हुआ बौद्ध धम्म एकमात्र ऐसा वैज्ञानिक धम्म है जिसमें समानता, स्वतंत्रता, मैत्री व करूणा सभी कुछ है। इसमें न किसी देवी-देवता से डरना होता है और न किसी देवी-देवता को खुश करने की जरूरत है। यह हमें निर्भय होकर जीना सिखाता है। यह हमें 'अपना दीपक स्वयं बनों' अर्थात खुद पर निर्भर होकर अपना विकास करने की प्ररेणा देता है। अतः बाबा साहब ने 14 अक्टूबर 1956 को 10 लाख अनुयायियों के साथ नागपुर में बौद्ध धम्म ग्रहण किया। इस प्रकार अन्य अधिकारों के अतिरिक्त बाबा साहब ने हमें अपने पुराने बौद्ध धम्म में पुनः जोड़ा।

वायसराय की कार्यसाधक कौंसिल में लेबर मैम्बर के रूप में मजदूरों के लिए न्यूनतम मजदूरी कानून पास करवाया। काम के घन्टे 12 से घटाकर 8 घन्टे करवाए। ट्रेड यूनियनों को मान्यता दिलवाई। कर्मचारियों के लिए अनिवार्य बीमा योजना लागू करवाई। महिला कर्मचारियों को बिना वेतन काटे प्रसूति अवकाश तथा मजदूरों व कर्मचारियों को हड़ताल का अधिकार दिलवाया।

बाबा साहब डॉ. भीम राव अंबेडकर जी आजाद भारत के प्रथम कानून मंत्री बने। संविधान सभा ने भारत का संविधान बनाने के लिए प्रारुप कमेटी का गठन किया। बाबा साहब इस कमेटी के अध्यक्ष बने। बाबा साहब ने भारत का संविधान 2 साल 11 महीने 18 दिन में कड़ी मेहनत से तैयार किया, जो 26 जनवरी 1950 को लागू हुआ। बाबा साहब द्वारा रचित संविधान के माध्यम से भारत के इतिहास में पहली बार धर्म द्वारा थोपी गई ऊंच-नीच, छुआ-छूत, असमानता, शोषण, गुलामी व दलितों को अधिकारों से वंचित करने की व्यवस्था समाप्त हुई। बाबा साहब के प्रयासों से ही दलितों के लिए विशेष तौर पर शिक्षा, सरकारी नौकरियों, लोकसभा, विधानसभा में आरक्षण का प्रावधान किया गया। वोट लेने और देने का अधिकार मिला। भारत के इतिहास मे यह बहुत बड़ी उपलब्धि है कि बाबा साहब द्वारा दिए गए अधिकारों के कारण ही कल का यह वंचित दलित समाज आज जीवन के प्रत्येक क्षेत्र जैसे- शिक्षा, सरकारी व प्राईवेट नौकरी, पंच, सरपंच, विधायक, सांसद व मंत्री (राजनीति) के अतिरिक्त व्यापार आदि सभी क्षेत्रों में आगे बढ़ रहा है।

बाबा साहब ने गहन अनुभव और अध्ययन के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला कि हिन्दू समाज में असमानता और अमानवीयता का जो षडयंत्र है यह किसी स्वाभाविक अथवा प्राकृतिक कारणों से नहीं है बल्कि एक सोची समझी साजिश का परिणाम है। बाबा साहब ने साजिश भरी जातिवादी व्यवस्था के खिलाफ विद्रोह किया। बाबा साहब ने ठान लिया कि आमूलचूल परिवर्तन के सिवाय इस व्यवस्था का कोई इलाज नहीं। इन दमनकारी प्रवृत्तियों के विरूद्ध बाबा साहब के प्रचण्ड विद्रोह ने लोगों के मानस को जगा दिया। बाबा साहब ने निष्कर्ष निकाला कि ब्राह्मणवादी सोच एवं व्यवस्था को जड़ से खत्म किये बिना भारतीय समाज में व्याप्त मानसिक गुलामी के तिलिस्म को तोड़ना सम्भव नहीं है। जब तक इस मानसिक गुलामी की

जंजीरों को नहीं तोड़ा जाता तब तक दबे कुचले लोगों का सर्वांगीण विकास संभव नहीं। ब्राह्मणवादी व्यवस्था ने भोले-भाले लोगों को भाग्य और भगवान के कुचक्र में फंसाकर उनकी प्रगति के सभी रास्ते बंद कर दिये है। बाबा साहब ने महसूस किया कि यह जाति-पाति, ऊँच-नीच तथा भेद-भाव पूर्ण व्यवस्था भारत की राष्ट्रीय शक्ति को निर्बल करने का एक महत्वपूर्ण कारण रही है। अतः यदि हम अपना संपूर्ण विकास चाहते है तो हमें बाबा साहब के मार्ग को पूर्ण-रूप से अपनाना होगा।

पूरी उम्र दलित समाज के उत्थान की खातिर घोर तप, परिश्रम, कष्ट व संघर्ष में बाबा साहब को अपने चार छोटे- छोटे बच्चे अल्पायु में ही खोने पड़े। युवावस्था में ही अपनी पत्नी खोनी पड़ी। खुद भी शुगर की बिमारी से पीड़ित हुए। करोड़ों लोगों के भविष्य को जगाकर 65 वर्ष की उम्र में 6 दिसम्बर, 1956 को 26 अलीपुर रोड़, दिल्ली में बाबा साहब डॉ. भीम राव अम्बेडकर जी चिरनिद्रा में सो गए।

बाबा साहब चाहते थे कि दलित युवक-युवतियां ऊँची शिक्षा ग्रहण करें तथा अपनी विद्वता के बल पर आगें बढ़ें। हमें सोचना चाहिए कि बाबा साहब ने अपना सारा जीवन हमारे उत्थान के लिए न्यौछावर किया। हम बाबा साहब के अधूरे कार्यों को पूरा करने का संकल्प लेकर, उन्हें पूरा करने में यथा-सम्भव सहयोग देकर उनके ऋण से उऋण होने का प्रयास कर सकते हैं।

आओ आज हम सब संकल्प ले कि हम उनके बताए हुए मार्ग पर चलकर, उनके विचारो को अंगीकार करते हुए शिक्षा और संगठन से समाज को सशक्त बनायें और अपने जीवन में खुशहाली लाएं तथा एक सुन्दर, सभ्य, स्वतंत्रता, समानता, बन्धुता एवं भाईचारे पर आधारित सामाजिक व्यवस्था का निर्माण करें।

अत्त दीपो भव

COMPLETE AMBEDKARISM ONLY WITH BUDDHISM

सम्पूर्ण अम्बेडकरवाद केवल बुद्ध धम्म के साथ

Social Action Groups for Ambedkarite Reforms (SAGAR)